



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (14-02-15)

मीठे मीठे अव्यक्त बापदादा के अति प्यारे, सिकीलधे, एक बाबा के प्यार में समाने वाले, हमारे सभी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश में बाबा की प्रत्यक्षता का झण्डा फहराने वाले सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - इस समय तो भारत में चारों तरफ शिवजयन्ती पर सेवाओं की धूम मची हुई है। बड़े अच्छे-अच्छे प्रोग्राम सभी कर रहे हैं। यहाँ आबूरोड में भी कल से 12 ज्योर्तिलिंगम् वाला बहुत सुन्दर मेला लगाया गया है। सभी शान्तिवन तथा कॉलोनी के भाई बहिनें खूब अथक बन गांव-गांव में जाकर शिव सन्देश के साथ सबको मेला देखने का निमन्त्रण दे रहे हैं। मैं भी लण्डन से होकर कल बहुत आराम से अपने मधुबन घर में पहुँच गई हूँ। वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह! शरीर कैसा भी है, समय पर साथ देता है। 40 वर्षों में विदेश की सेवाओं का कितना विस्तार हुआ है! यू.के., यूरोप के सभी भाई बहिनें मिलने के लिए आते रहे। लण्डन में कैसे डायमण्ड हाउस, ग्लोबल हाउस, रिट्रीट हाउस, वर्दिंग, लेस्टर आदि में बड़े सेवास्थान बनें, साथ-साथ पूरे विश्व में कैसे सेवायें फैलती गईं, सब दृश्य आंखों के सामने घूमते अनुभव होता कि हम सबका मीठा प्यारा बाबा करन-करावनहार बन सब कुछ करते अपने आपको छिपा लेता है।

मैं भक्ति मार्ग में जब राजा जनक की कहानी सुनती थी कि वह विदेही भी था तो ट्रस्टी भी था। विदेही अर्थात् देह में होते हुए न्यारा और राज्य कारोबार में होते हुए ट्रस्टी। मैंने भी ट्रस्टी रहने से बहुत सुख पाया है। ट्रस्टी माना मेरा कुछ नहीं, जरा भी मेरेपन का भान नहीं। एक है भान, दूसरा है अभिमान, अगर देह का भान नहीं है तो व्यवहार बड़ा अच्छा होगा, उसे हर कार्य में सहयोगी बनना सहज लगेगा। उसे कोई भी चिंता वा चिंतन नहीं। कहते भी हैं चिंता तेरी तब मिटेगी, जब चिंतन में ले लो राम। मेरे चिंतन में तो सदा एक बाबा ही रहता। कभी नाउम्मीदी का ख्याल नहीं आता। उम्मीद रखना माना हिम्मत बच्चे मददे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राजी, नियत साफ मुराद हांसिल.. यह प्रैक्टिकल लाइफ है। अभी भी मैं यह नहीं कहेंगी कि मैं ठीक नहीं हूँ, मुझे छोड़ दो। नहीं। हिम्मत बच्चे मददे बाप। अन्दर की सूक्ष्म शुद्धि से जो संकल्प करेंगे वो साकार होगा। किसी में भी नाउम्मीद नहीं होना है। सच्ची दिल है तो बाबा मेरे ऊपर राजी है। अपनी लाइफ हिस्ट्री में सदा राजी रहना और सबको राजी-खुशी देख खुश होना। कहते हैं कर्म बड़े बलवान हैं, कर्म का फल ऊंचा मिलता है, इसलिए मन वाणी कर्म को श्रेष्ठ बनाना है, श्वास, संकल्प, समय को सफल करना है। सिम्पल रहकर सैम्पुल बनना है। जैसे बाबा के बोल, बाबा की दृष्टि महासुखकारी है। बोल और दृष्टि जादू का काम करते हैं। मुस्कराने में भी कोई मेहनत नहीं, समय भी नहीं लगता। तो जैसा मेरा बाप वैसे हम बच्चे। इज़ी है बाबा को फॉलो करना। हर एक सिर्फ चार बातों का ध्यान रखे - 1- जो सच है वही मुझे करना है। 2- सबके साथ प्यार से चलना है। 3- सबमें विश्वास रखना है और 4- एक दो के साथ संबंध में आते नम्रता पूर्वक, मधुर व्यवहार करना है।

बोलो, बीती को बीती कर अब ऐसी सच्ची होली मनायेंगे ना! शिवजयन्ती के बाद होली आती है। तो इस बार सभी ऐसी सच्ची होली मनाना, एक दो को ऐसा पक्का रंग लगाना जो सब बाप समान बन जायें। ऐसे होली बनाने वाले होली उत्सव की सबको बहुत-बहुत बधाई हो।

अच्छा - सबको दिल से स्नेह भरी याद....

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



तपस्या वर्ष के लिए होम वर्क - मार्च 2015

A) अशरीरी स्थिति में रहने का अभ्यास बढ़ाओ

1) अशरीरी बनना अर्थात् आवाज़ से परे हो जाना। शरीर है तो आवाज़ है। शरीर से परे हो जाओ तो साइलेंस। एक सेकेण्ड में सर्विस के संकल्प में आये और एक सेकेण्ड में संकल्प से परे स्वरूप में स्थित हो जायें। कार्य प्रति शारीरिक भान में आये फिर सेकेण्ड में अशरीरी हो जायें, जब यह ड्रिल पक्की होगी तब सभी परिस्थितियों का सामना कर सकेंगे।

2) जैसे बापदादा अशरीरी से शरीर में आते हैं वैसे ही बच्चों को भी अशरीरी हो करके शरीर में आना है। अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर फिर व्यक्त में आना है। जैसे इस शरीर को छोड़ना और शरीर को लेना यह अनुभव सभी को है। ऐसे ही जब चाहो तब शरीर का भान छोड़कर अशरीरी बन जाओ और जब चाहो तब शरीर का आधार लेकर कर्म करो। बिल्कुल ऐसे ही अनुभव हो जैसे यह स्थूल चोला अलग है और चोले को धारण करने वाली मैं आत्मा अलग हूँ।

3) वैसे अशरीरी होना सहज है लेकिन जिस समय कोई बात सामने हो, कोई सर्विस के झंझट सामने हों, कोई हलचल में लाने वाली परिस्थितियां हों, ऐसे समय में सोचा और अशरीरी हो जाएं, इसके लिए बहुत समय का अभ्यास चाहिए। सोचना और करना साथ-साथ चले तब अन्तिम पेपर में पास हो सकेंगे।

4) एक सेकेण्ड में चोले से अलग तभी हो सकेंगे जब किसी भी संस्कारों की टाइटेनेस नहीं होगी। जैसे कोई भी चीज़ अगर चिपकी हुई होती है तो उनको खोलना मुश्किल होता है। हल्के होने से सहज ही अलग हो जाते हैं। वैसे ही अगर अपने संस्कारों में ज़रा भी इज़ीपन नहीं होगा तो फिर अशरीरीपन का अनुभव कर नहीं सकेंगे इसलिए इज़ी और एलर्ट रहो।

5) जैसे कोई कमजोर होता है तो उनको शक्ति भरने के लिए ग्लूकोज़ चढ़ाते हैं, ऐसे जब अपने को शरीर से परे अशरीरी आत्मा समझते हो तो यह साक्षीपन की अवस्था शक्ति भरने का काम करती है और जितना समय साक्षी अवस्था की स्थिति रहती है उतना ही बाप साथी भी याद रहता है अर्थात् साथ रहता है।

6) अभ्यास करो - देह और देह के देश को भूल अशरीरी परमधाम निवासी बन जाओ, फिर परमधाम निवासी से अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जाओ, फिर सेवा के प्रति आवाज़ में आओ, सेवा करते हुए भी अपने स्वरूप की स्मृति में रहो, अपनी बुद्धि को जहाँ चाहो वहाँ एक सेकेण्ड से भी कम समय में लगा लो

तब पास विद आनर बनेंगे।

7) जैसे एक सेकेण्ड में स्वीच ऑन और ऑफ किया जाता है, ऐसे ही एक सेकेण्ड में शरीर का आधार लिया और एक सेकेण्ड में शरीर से परे अशरीरी स्थिति में स्थित हो गये। अभी-अभी शरीर में आये, अभी-अभी अशरीरी बन गये, आवश्यकता हुई तो शरीर रूपी वस्त्र धारण किया, आवश्यकता न हुई तो शरीर से अलग हो गये। यह प्रैक्टिस करनी है, इसी को ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है।

8) बापदादा अचानक डायरेक्शन दे कि इस शरीर रूपी घर को छोड़, देह-अभिमान की स्थिति को छोड़ देही-अभिमानी बन जाओ, इस दुनिया से परे अपने स्वीट होम में चले जाओ तो जा सकते हो? युद्ध स्थल में युद्ध करते-करते समय तो नहीं बिता देंगे! अशरीरी बनने में अगर युद्ध करने में ही समय लग गया तो अंतिम पेपर में मार्क्स वा डिवीजन कौन-सा आयेगा!

9) जैसे हठयोगी अपने श्वास को जितना समय चाहें उतना समय रोक सकते हैं। आप सहजयोगी, स्वतः योगी, सदायोगी, कर्मयोगी, श्रेष्ठयोगी अपने संकल्प को, श्वास को प्राणेश्वर बाप के ज्ञान के आधार पर जो संकल्प, जैसा संकल्प जितना समय करना चाहो उतना समय उसी संकल्प में स्थित हो जाओ। अभी-अभी शुद्ध संकल्प में रमण करो, अभी-अभी एक ही लगन अर्थात् एक ही बाप से मिलन की, एक ही अशरीरी बनने के शुद्ध-संकल्प में स्थित हो जाओ।

10) अब संगठित रूप में एक ही शुद्ध संकल्प अर्थात् एकरस स्थिति बनाने का अभ्यास करो तब ही विश्व के अन्दर शक्ति सेना का नाम बाला होगा। जब चाहे शरीर का आधार लो और जब चाहे शरीर का आधार छोड़कर अपने अशरीरी स्वरूप में स्थित हो जाओ। जैसे शरीर धारण किया वैसे ही शरीर से न्यारे हो जायें, यही अनुभव अन्तिम पेपर में फर्स्ट नम्बर लाने का आधार है।

11) अशरीरी स्थिति का अनुभव करने के लिए सूक्ष्म संकल्प रूप में भी कहाँ लगाव न हो, सम्बन्ध के रूप में, सम्पर्क के रूप में अथवा अपनी कोई विशेषता की तरफ भी लगाव न हो। अगर अपनी कोई विशेषता में भी लगाव है तो वह भी लगाव बन्धन-युक्त कर देगा और वह लगाव अशरीरी बनने नहीं देगा।

12) जितना अव्यक्त लाइट रूप में स्थित होंगे, उतना शरीर से परे का अभ्यास होने के कारण यदि दो-चार मिनट भी अशरीरी बन जायेंगे, तो मानों जैसेकि चार घण्टे का आराम कर लिया।

ऐसा समय आयेगा जो नींद के बजाए चार-पाँच मिनट अशरीरी बन जायेंगे और शरीर को आराम मिल जायेगा। लाइट स्वरूप के स्मृति को मजबूत करने से हिसाब-किताब चुकत करने में भी लाइट रूप हो जायेंगे।

13) अशरीरी बनने के लिए समेटने की शक्ति बहुत आवश्यक है। अपने देह-अभिमान के संकल्प को, देह के दुनिया की परिस्थितियों के संकल्प को समेटना है। शरीर और शरीर के सर्व सम्पर्क की वस्तुओं को, अपनी आवश्यकताओं के साधनों की प्राप्ति के संकल्प को भी समेटना है। घर जाने के संकल्प के सिवाय अन्य किसी संकल्प का विस्तार न हो—बस यही संकल्प हो कि अब अपने घर गया कि गया। अनुभव करो कि मैं आत्मा इस आकाश तत्व से भी पार उड़ती हुई जा रही हूँ, इसके लिये अब से अकाल तख्तनशीन होने का अभ्यास बढ़ाओ।

14) अशरीरी बनना वायरलेस सेट है। वाइसलेस बनना ही वायरलेस सेट की सेटिंग है। जरा भी अंश के भी अंशमात्र विकार वायरलेस के सेट को बेकार कर देगा इसलिए अब कर्मबन्धनी से कर्मयोगी बनो। अनेक बन्धनों से मुक्त एक बाप के सम्बन्ध में समझो तो सदा एवररेडी रहेंगे।

15) कितना भी कार्य की चारों ओर की खींचतान हो, बुद्धि सेवा के कार्य में अति बिज़ी हो – ऐसे टाइम पर अशरीरी बनने का अभ्यास करके देखो। यथार्थ सेवा का कभी बन्धन होता ही नहीं क्योंकि योग युक्त, युक्तियुक्त सेवाधारी सदा सेवा करते भी उपराम रहते हैं। ऐसे नहीं कि सेवा ज्यादा है इसलिए अशरीरी नहीं बन सकते। याद रखो मेरी सेवा नहीं बाप ने दी है तो निर्बन्धन रहेंगे। 'ट्रस्टी हूँ, बन्धन मुक्त हूँ' ऐसी प्रैक्टिस करो। अति के समय अन्त की स्टेज, कर्मातीत अवस्था का अभ्यास करो।

16) अगर संकल्प शक्ति कंट्रोल में नहीं आती तो अशरीरी भव का इन्जेक्शन लगा दो। बाप के पास बैठ जाओ। तो संकल्प शक्ति व्यर्थ नहीं उछलेगी। अभी व्यक्त में रहते अव्यक्त में उड़ते रहो। उड़ना सीखो। सदा अव्यक्त वतन में विदेही स्थिति में उड़ते रहो, अशरीरी स्टेज पर उड़ते रहो।

B) एकाग्रता के अभ्यास द्वारा ज्ञान सूर्य का चमत्कार दिखाओ

1) कोई भी कार्य करते व पार्ट बजाते सागर समान ऊपर से भले हलचल दिखाई दे लेकिन अन्दर की स्थिति नथिंग न्यु की हो। रचयिता और रचना के अन्त को जानने वाले त्रिकालदर्शी आराम से शान्ति की स्टेज पर ऐसे स्थित हो जाएं जो कोई भी कर्मन्द्रियों की हलचल आन्तरिक स्टेज को हिला न सके।

2) जब आत्मिक शक्ति वाली, सेमी प्योर आत्मायें अपनी साधना द्वारा आत्माओं का आह्वान कर सकती हैं, अल्पकाल के साधनों

द्वारा दूर बैठी हुई आत्माओं को चमत्कार दिखाकर अपनी तरफ आकर्षित कर सकती हैं, तो परमात्म शक्ति अर्थात् सर्व श्रेष्ठ शक्ति क्या नहीं कर सकती परन्तु इसके लिए विशेष एकाग्रता का अभ्यास चाहिए।

3) जैसे शक्तियों के जड़ चित्रों में वरदान देने का स्थूल रूप हस्तों के रूप में दिखाया है, हस्त भी एकाग्र रूप दिखाते हैं। वरदान का पोज़ हस्त, दृष्टि और संकल्प एकाग्र दिखाते हैं, ऐसे चैतन्य रूप में एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ, तब रूह, रूह का आह्वान करके रुहानी सेवा कर सकेगी।

4) अभी तक वाचा और कर्मणा की सेवा में जो तेरी-मेरी का, नाम, मान, शान का, स्वभाव, संस्कार का टकराव होता है, समय व सम्पत्ति का अभाव होता है, यह सर्व विघ्न एकाग्रता के अभ्यास द्वारा मन्सा सेवा करने से सहज समाप्त हो जायेंगे। रुहानी सेवा का एक संस्कार बन जायेगा।

5) जो भी आत्मायें वाणी द्वारा व प्रैक्टिकल लाईफ के प्रभाव द्वारा सम्पर्क में आई हैं, वा सम्पर्क में आने के उम्मीदवार हैं, उन आत्माओं को रुहानी शक्ति का अनुभव कराओ। जैसे भक्त लोग स्थूल भोजन का व्रत रखते हैं, तो सर्विसएबुल ज्ञानी तू आत्माओं को व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म की हलचल से परे एकाग्रता अर्थात् रुहानियत में रहने का व्रत लेना है तब आत्माओं को ज्ञान सूर्य का चमत्कार दिखा सकेंगे।

6) अभी एकाग्रता का दृढ़ संकल्प करने वाला गुप तैयार होना चाहिए, जो सागर के तले में जाकर अनुभव के हीरे, मोती लेकर आये। लहरों में लहराने का अनुभव तो किया अब अन्दर तले में जाना है। अमूल्य खजाने तले में मिलते हैं, इससे आटोमेटिक सब बातों से किनारा हो जायेगा।

7) एकाग्रता की शक्ति बहुत विचित्र रंग दिखा सकती है। एकाग्रता से ही सिद्धियां प्राप्त होती हैं। स्वयं की औषधि भी एकाग्रता की शक्ति से कर सकते हैं। अनेक रोगियों को निरोगी भी बना सकते हैं। कोई ने चलती हुई चीज़ को रोका, यह एकाग्रता की सिद्धि है। स्टॉप कहो तो स्टॉप हो जाए तब वरदानी रूप में जय-जयकार के नारे बजेंगे।

8) बुद्धि की एकाग्रता से परखने की शक्ति आयेगी। इसके लिए व्यर्थ वा अशुद्ध संकल्पों की हलचल से परे एक में सर्व रस लेने वाली एकरस स्थिति चाहिए। अगर अनेक रसों में बुद्धि और स्थिति डगमग होती है तो परखने की शक्ति कम हो जाती है और न परखने के कारण माया अपना ग्राहक बना देती है। यह माया है, यह भी पहचान नहीं सकते। यह रांग है, यह भी जान नहीं सकते।

9) वर्तमान समय विश्व कल्याण करने का सहज साधन अपने श्रेष्ठ संकल्पों की एकाग्रता द्वारा, सर्व आत्माओं की भटकती

हुई बुद्धि को एकाग्र करना है। सारे विश्व की सर्व आत्मायें विशेष यही चाहना रखती हैं कि भटकी हुई बुद्धि एकाग्र हो जाए वा मन चंचलता से एकाग्र हो जाए। यह विश्व की मांग वा चाहना तब पूरी कर सकेंगे जब एकाग्र होने का अभ्यास होगा।

10) एकाग्रता अर्थात् सदा एक बाप दूसरा न कोई, ऐसे निरन्तर एकरस स्थिति में स्थित होने का विशेष अभ्यास करो। उसके लिए एक तो व्यर्थ संकल्पों को शुद्ध संकल्पों में परिवर्तन करो। दूसरा माया के आने वाले अनेक प्रकार के विघ्नों को ईश्वरीय लग्न के आधार से सहज समाप्त करते, कदम को आगे बढ़ाते चलो।

11) बुद्धि को एकाग्र करने के लिए मनमनाभव के मंत्र को सदा स्मृति में रखो। मनमनाभव के मंत्र की प्रैक्टिकल धारणा से पहला नम्बर आ सकते हो। मन की एकाग्रता अर्थात् एक की याद में रहना, एकाग्र होना यही एकान्त है। अभी अपने को एकान्तवासी बनाओ अर्थात् सर्व आकर्षणों के वायब्रेशन से अन्तर्मुख बनो। अब यही अभ्यास काम में आयेगा।

12) मन्सा सेवा करने के लिए सदा एकाग्रता का अभ्यास चाहिए। इसके लिए व्यर्थ समाप्त हो, सर्व शक्तियों का अनुभव जीवन का अंग बन जाये। जैसे बाप परफेक्ट है ऐसे बच्चे भी बाप समान

हों, कोई डिफेक्ट न हो।

13) एकाग्रता अर्थात् एक ही श्रेष्ठ संकल्प में सदा स्थित रहना। जिस एक बीज रूपी संकल्प में सारा वृक्ष रूपी विस्तार समाया हुआ है। एकाग्रता को बढ़ाओ तो सर्व प्रकार की हलचल समाप्त हो जायेगी। एकाग्रता के आधार पर जो वस्तु जैसी है, वैसी स्पष्ट देखने में आयेगी। ऐसी एकाग्र स्थिति में स्थित होने वाला स्वयं जो है, जैसा है अथवा जो वस्तु जैसी है वैसी स्पष्ट अनुभव होगी।

14) आजकल की दुनिया में राजनीति की हलचल, वस्तुओं के मूल्य की हलचल, करैन्सी की हलचल, कर्मभोग की हलचल, धर्म की हलचल – ऐसे सर्व प्रकार की हलचल से हर एक तंग आ गये हैं। इससे बचने के लिए एकाग्रता को अपनाओ, एकान्तवासी बनो। एकान्तवासी से एकाग्र सहज ही हो जायेंगे।

15) परमार्थ मार्ग में विघ्न-विनाशक बनने का साधन है - माया को परखना और परखने के बाद निर्णय करना क्योंकि परमार्थी बच्चों के सामने माया भी रॉयल ईश्वरीय रूप रच करके आती है, जिसको परखने के लिए एकाग्रता अर्थात् साइलेन्स की शक्ति को बढ़ाओ।

शिवबाबा याद है ?

30-3-13

ओम् शान्ति

मधुबन

“एवरहेल्दी, वेल्दी, हैपी रहना है तो रोज दो बार ज्ञान स्नान जरूर करो”

(दादी जानकी)

मीठा बाबा, प्यारा बाबा रोज़ ऐसी बातें सुनाता है जो एकदम खुशी का पारा तो चढ़े लेकिन शक्ति ऐसी आ जाए जो माया को विदाई दे देवे। जो माया को विदाई देते हैं उनको चारों तरफ से बधाइयाँ मिलती हैं। तो मेरा बाबा, मीठा बाबा सुबह को बताता है परमात्मा कौन है? शाम को दिखाता है माया क्या है? रोज़ का अमृतवेला अच्छा है लेकिन हर दिन की बाबा से मिलन की भासना न्यारी और प्यारी है, नुमाशाम का अनुभव अलग है। दो बार ज्ञान स्नान करने से एवरहेल्दी, एवरहैपी बनेंगे। ऐसे कोई कर्म न करो जो कर्म कूटना पड़े। बीमारियाँ ऐसी आ जाएं या कुछ भी हो जाये, कर्म फिलोसॉफी बड़ी गुह्य है। किसी भी साधू, संत, सन्यासी ने आत्मा का ज्ञान नहीं दिया, यह ज्ञान परमात्मा ने ही दिया। आत्मायें जब बहुत तमोप्रधान बन गयी हैं तब परमात्मा ज्ञान दे रहा है। फिर आती है कर्मों की गुह्यगति कर्मों की गुह्य गति को जानो, अगर राजाओं का राजा बनना है तो। नहीं तो आत्मा और परमात्मा के ज्ञान से सतयुग में तो आ ही जायेंगे।

दूसरा तन, मन, धन से सेवा में सहयोगी बनने से सुख मिलता

इलाही है, कर्म श्रेष्ठ हो, रूहानियत हो, ईश्वरीय स्नेह हो। पुराना कोई भी संस्कार स्वभाव जो बीच में डिस्टर्ब करता है तो फंस जाते हैं और अपने स्वभाव संस्कार को समझने से दूसरे के स्वभाव संस्कार के वश नहीं होते हैं, उसका असर नहीं होता है। मुझे बदलना है, कैसे बदलना है, बाबा वो रोज़ समझाता है। आत्म-अभिमानि स्थिति से, परमात्म स्नेह से घर को याद करके हमें अपने को बदलना है। बाबा हम बच्चों को राज्य करने के लायक बनाते हैं। सी फादर, फॉलो फादर। किसी को न देखो। बच्चों का इतना प्यार है जो कहते हैं बाबा तुम्हारा ही सुनेंगे, तुम्हीं संग खायेंगे, तुम्हारे संग में रहेंगे।

सारी लाइफ में हिम्मते बच्चे मददे बाप, वन्डरफुल मेरा बाबा है, आप सिर्फ कुछ नहीं करो हिम्मते बच्चे मददे बाप। सच्ची दिल पर साहेब राजी अनुभव है, मेरी स्वयं की सच्ची दिल है तो कोई भी मेरे ऊपर प्रभाव, दबाव, झुकाव असर नहीं करेगा। प्रीत बुद्धि विजयंती। बाबा हरेक बच्चे को अपना बनाके साथ ले जाने के लिए छोड़ता नहीं है, वो ले ही जायेगा।

“सतयुगी राजाई के लिए याद में रहने का, कर्मातीत वा अव्यक्त बनने का पुरुषार्थ जरूर करना है”

(दादी जानकी)

अभी जी चाहता है कि सब जल्दी-जल्दी सम्पूर्ण बन हम सतयुग में चलें। बाबा कहता है अभी थोड़ा टाइम चाहिए, सतयुग में राज्य करने वाले तो तैयार हो जाएं ना।

मैंने साकार बाबा को अच्छी तरह से देखा है, बहुत बच्चों के लिए प्यार है, अव्यक्त हो करके भी और ज्यादा प्यार करने लगा है, जिससे बच्चों को मीसिंग महसूस न हो, साक्षी होकर देख रही हूँ। साकार में किया वो अनुभव है, पर अव्यक्त हो करके अव्यक्त रूप से बहुत प्यार कर रहा है। जब साकार में थे तो खाने और सोने में भी टाइम देना पड़ता था, अभी तो फ्री हो करके सेवा कर रहे हैं। भले बाबा को कभी सोया हुआ देखा नहीं, सदा ही जागती ज्योत देखा। फिर भी अव्यक्त हो करके सारा समय बच्चों की सेवा में है।

बाबा शरीर में बैठे भी हैं, लोन पर भी दिया है, तो शिवबाबा यूज कर रहा है, इस तन द्वारा हम सबको समझा रहा है, माता-पिता के रूप में यह बाप, यह दादा दोनों मिल करके। बाबा ने कहा सिर्फ लोन से राजाई नहीं मिलेगी, राजाई के लिए याद में रहने का, कर्मातीत बनने का, अव्यक्त बनने का पुरुषार्थ करना है। हम सारी दुनिया से, शरीर से भी न्यारे बन करके बाबा के बन गये हैं। बाबा ने ब्रह्मा द्वारा हमें क्या से क्या बना दिया है! सतयुग में राजाई मिलेगी वह तो बड़ी बात नहीं है, वो तो फिक्स हुई पड़ी है, परन्तु अभी राजाई का नशा है! राजयोग सीख रहे हैं, भगवान सिखा रहा है राजाओं का राजा बनाने के लिए। गीता में यह लिखा हुआ है, कृष्ण नहीं सुना रहा है, निराकार परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा सुना रहा है। दिलाराम बाबा दिल में बैठके, मन को शान्त बुद्धि को अच्छा सोचना सिखा रहा है। बाबा जब अच्छी गुह्य प्वाइंट सुनाता है, तो बाबा फौरन कहता है यह बुद्धि में धारण करनी चाहिए। यह नहीं कहेगा मन में धारण करना चाहिए, बुद्धि में धारण करना चाहिए। तो सारा काम है बुद्धि का।

बाबा ने अपनी दृष्टि से, अच्छे वायुमण्डल से मन को शान्त कर दिया है। हरेक को आत्मा का ज्ञान मिला है और आत्मा परमात्मा की सन्तान है, यह भी समझ आयी है पर नशा और निश्चय, निश्चय होगा तो नशा चढ़ेगा। निश्चय बुद्धि से होगा, नशा कर्म से होगा, प्रैक्टिकल लाइफ से होगा। बाबा को इतना नशा रहता था, बात मत पूछो, पार्ट बेगरी है, डायरेक्शन ऐसे देगा ... कहेगा नारायण बनने वाला हूँ ना! वो संस्कार काम करते हैं। मनमनाभव तभी हो सकेगे जब बुद्धि में ज्ञान की धारणा होगी।

मन कर्मेन्द्रियों के वश होने के आदती हो गया है, तो विकारी कर्मेन्द्रियाँ हो गयी, अभी उन्हीं कर्मेन्द्रियों के द्वारा हमको कर्म में

आ करके पवित्रता के योगबल से निर्विकारी बनना है। विशाश से वाइसलेस, कहाँ विशाश कहाँ वाइसलेस? अभी हम पूज्य बन रहे हैं, जब सतयुग में होंगे तब तो पूजा नहीं होगी, पूजा हमारी द्वापर से शुरू होगी, पर पूज्य अभी बन रहे हैं। हम पुजारी भल थे परन्तु इच्छाओं से पूजा नहीं करते थे, यह चाहिए, चाहिए ... इसलिए पूजा नहीं करते थे परन्तु थोड़ा विकारी होने कारण ऐसे न लायक थे। अभी लायक बन रहे हैं। महिमा योग्य, गायन योग्य, पूज्यनीय योग्य बन रहे हैं। जो बाप के गुण हैं वह मेरी लाइफ में आ जायें। तुम्हें पाके हमने जहान पा लिया... यह हम नहीं गा रहे हैं, दूसरे हमारे लिए गा रहे हैं। बाबा ने धरती और आसमान से पार जाने का रास्ता दिखा दिया है, कितनी बाबा की मेहरबानी है। कितना पाया है, बिना कोई खर्चे के।

प्लेन देखो कैसे स्पीड पकड़ता है, ऊपर उड़ता है, थोड़ा बीच में होगा तो फास्ट नहीं उड़ सकेगा। ऐसे हमारी स्थिति भी इतनी ऊंची हो तब उड़ने लायक होगी। जब प्लेन ऊपर जाकर स्पीड पकड़े तब आराम से चले, पहले कहते हैं सीट बेल्ट बांध लो। इधर से उधर नहीं जाओ, खाना है तो वहाँ बैठे-बैठे ही मिलेगा। फर्स्टक्लास की टिकट लो या सेकेण्ड क्लास की लो या थर्ड क्लास की लो। जो रॉयल होते हैं वो ऐसे नहीं चढ़ते हैं।

ज्ञान की वैल्यू बहुत है, समय की वैल्यू बहुत है। मैं बाबा को प्यार करती हूँ, बुद्धि साफ हो, श्रेष्ठ सोचने की ताकत हो। जैसा समय वैसी बात, फालतू बात नहीं। फालतू बातें एक बारी किया तो आदत पड़ जायेगी। बड़ी खराब आदत है, फालतू सोचा तो सोचने की भी आदत पड़ जायेगी। परन्तु मैंने देखा है अच्छा सोचने की वैल्यू से टाइम सफल होता है। तो जैसे बाबा समझाता है, ऐसा हमारा पुरुषार्थ हो तो बाप की दुआयें और सबकी दुआयें...। श्रीमत को पालन करने की कमी होगी तो बाबा की याद नहीं आयेगी। जब कोई कठिनाई वाली बात होती है तो वो याद के समय खास याद आती है। अगर कठिनाई वाली बात याद के समय याद आयी तो कठिनाई बढ़ेगी या कम होगी? याद यथार्थ है तो कठिनाई को भगा देगी। यह दिन रात, सोते जागते, खाते पीते कहाँ भी रहते, अपने को चेक करते जाओ चेंज होते जाओ।

जिसको हिम्मत बच्चे मददे बाप का अनुभव होगा उसका उमंग-उत्साह कम नहीं होगा। किसी भी बात में डाउट नहीं रखो, जरूर होगा। बाबा की मदद बहुत है, पर बाबा की मदद तब है जब सच्ची दिल पर साहेब राजी है। ऐसे बाबा मदद नहीं करता है। एक बार भी दिल में सच्चाई या सफाई नहीं रही तो बाबा की

मदद का जो कॉन्टैक्ट है वो कैन्सिल हो जायेगा। फिर अकेला कुछ नहीं कर सकता है, सिर भारी हो जाता है। बोलना चलना भारी, भारी क्या करेगा? थोड़ा काम करके थक जायेगा। थक मत जाना रात के राही... सुबह की मंजिल दूर नहीं, यह गीत बहुत अच्छा है। थकावट की थोड़ी-सी भी बीमारी किसी को हो, तो तन भी थकावट के कारण बीमार पड़ता है इसलिए कभी थकावट न हो और खुशी जैसी खुराक हो, चिंता का नाम-निशान न हो।

खुशी की खुराक चलने में, उड़ने में मदद करती है। फिर जितना चलते हैं, आगे बढ़ते हैं, उतना उमंग-उत्साह से आगे ऐसे बढ़ते हैं जैसेकि कोई मुझे चला रहा है। चल उड़ जा रे पंछी, पंख आ गये। वन्दरफुल बाबा आप उड़ा रहे हो।

एक बारी भी किसी कारण से अगर पुरुषार्थ में ढीलापन आया तो सुस्ती आयेगी, थकावट होगी। तो खबरदार रहो, होशियार रहो और कंटिनिव पुरुषार्थ करते रहो। पीछे नहीं देखना है, पुराने जमाने में जब कोई सेवा पर जाते थे या जॉब पर जाते थे, तो घर से जायेंगे तो वापस ऐसे मुड़कर नहीं देखेंगे, अपशकुन लगेगा। यह भी बड़ी भूल है, हम घर जा रहे हैं इतनी कमाई कर रहे हैं, पीछे नहीं देखना है। बीती बात को देखना यह अपशकुन है। आगे नहीं चल सकेंगे। बीती बातें फिर ऐसी हैं, ऐसे ऐसे पकड़के माथा ही खराब कर देंगी। अगर मैं खबरदार, होशियार नहीं हूँ, बाबा की मदद के अनुसार नहीं चल रही हूँ.. क्योंकि बाबा की मदद लेती हूँ तो मददगार बनती हूँ, बाबा की सेवा में हाज़िर रहती हूँ। अगर नहीं रहती हूँ फ्री हूँ तो ईविल बातें, ईविल सोल्स सब वार

करती हैं। भगवान की शक्ति नहीं है तो वह पकड़ती है। किसी को भी इविल सोल क्यों तंग करती है? कारण क्या है? जरूर प्युरिटी की शक्ति जो बाबा से मिल रही है, वह नहीं ले रहे हैं। इतनी भी इम्प्युरिटी है तो कहीं से भी प्रवेशता हो सकती है, इसलिए कोई भी प्रकार का फैशन आदि नहीं करो। बहुत-बहुत सिम्पल रहो, स्वच्छ रहो।

आपस में प्यार (सच्चा दिल का स्नेह) हो तो ऐसा रुहानी प्यार बाबा की याद दिलाता है। बाबा जो दे रहा है वो सारा दिन देखो। अगर किसी दो की आपस में नहीं बनती हो तो क्या करेंगे? हिसाब-किताब हो जायेगा। प्लीज़ सम्भालो, आपस में न बनें, दोषी कौन? वो कहेगा यह दोषी, यह कहेगा वो दोषी, तो वेस्ट ऑफ टाइम। यह ऐसे वेस्ट ऑफ टाइम करने की आदत रियलाइजेशन से खत्म करो। कोई दोषी नहीं है, ड्रामा की नॉलेज सुख-शान्ति सम्पन्न बनाती है। हर एक का अपना पार्ट है, हमारी शुभ भावना है, सब ऐसे अच्छे और सम्पन्न बन जायें, जरूर बनेंगे, अच्छा जितना भी बनें, मैं भावना को कम नहीं करूँगी। अगर मैं भावना कम करूँगी तो नुकसान मेरे को होगा। शुद्ध और शुभ भावना से शान्त तभी रह सकेंगे जब बीती बातों के चिंतन से फ्री रहेंगे। कभी परन्तु नहीं कहो, परन्तु .. कब-कब... यह शब्द बोलना भी बड़ी भूल है। कभी थोड़ा भी उल्टा कर्म होता है, तो सारी कमाई चट। तो शुभ बोलो, ऐसे वचन बोलो जो हमारा उमंग-उत्साह कभी कम न हो जाये। हमारे उमंग-उत्साह को देख औरों को भी उमंग-उत्साह के पंख आ जायें।

29-10-14

“संगठन में बातें तो आयेंगी लेकिन हमारा ध्यान पढ़ाई और योग पर हो तो अपार खुशी में रहेंगे” (दादी गुल्जार)

हम सभी एक दूसरे को देख खुश होते हैं, क्यों? क्योंकि हमको बाबा ने सारे विश्व में से चाहे इण्डिया हो या कोई भी स्थान, सब जगह से चुनकर सिकीलधा बनाया है। कितना सुन्दर हॉल बनाकर दिया है, जिसमें मेरे बच्चे बैठें और उन्हें जरा भी दुःख न हो। इतना ख्याल रखता है बाबा बच्चों का। बाबा को सभी बच्चों से विशेष प्यार है। बाबा को बहुत अच्छा लगता है कि इन्होंने हिम्मत से खुद को बनाया है। बाबा का बच्चों की एक एक चीज़ पर अटेंशन जाता है। हमने साकार बाबा को देखा, बच्चों की खुशी के लिए अपनी जान देने को भी तैयार रहता था, बस मेरे बच्चों को दुःख न हो। एक एक बच्चे से बाबा को बहुत प्यार है। हम सभी भी बाबा के प्यार के हकदार हैं। जितना बाबा का प्यार स्वीकार करते रहेंगे

उतना ही अपने को भाग्यवान समझेंगे। बाबा ने हमें अपना बनाया, सुख शान्ति तो है। मैं कहती हूँ बाबा ने बच्चों के लिए क्या क्या बनाकर दिया है जिससे बच्चों को दुःख न हो। अगर कोई बीमार भी होता था, तो बाबा कहता था बच्चे की बीमारी मुझे लग जाये बच्चे को नहीं। क्या हमें भी बाबा से इतना प्यार है। प्यार में तो क्या नहीं कुर्बान किया जा सकता। स्थूल वस्तु नहीं, सूक्ष्म संस्कारों को बाबा पर कुर्बान करना क्या बड़ी बात है। बाबा हमारा कितना ध्यान रखते हैं यह देख बहुत खुशी होती है। दिल से निकलता है वाह बाबा वाह! बाबा ने बच्चों के लिए कितने सुख के साधन बनाये हैं। सुबह से लेकर रात तक जो भी दिनचर्या बीतती है उसमें कितने अथाह सुख के साधन हैं। हम जब यहाँ आते हैं तो आपका जीवन

देख हमें भी हमारा बचपन याद आ जाता है। बाबा ने हमें भी बहुत सुख के साधन दिये थे। फिर सेवा में लग गये, सेवा में तो अपने अपने ढंग के स्थान होते हैं लेकिन जब तक साकार बाबा के साथ थे तो बहुत सुख के साधन मिले, जैसे अभी आपको मिले हैं। आपके भाग्य को देख खुशी होती है - वाह मेरे भाई बहनें वाह! बाबा ने प्यार से आपके लिए यह स्थान बनवाया है। भले दूसरों के सहयोग से बना है लेकिन बनवाने वाला कौन? बाबा। कदम-कदम पर वाह बाबा वाह का अनुभव करते रहो। वैसे तो साधन सेन्टर्स पर भी होते हैं पर यहाँ संगठन में हर प्रकार के साधन होना कम बात नहीं। आपको जो यहाँ साधनों के साथ ज्ञान और योग की पालना मिल रही है उसको स्मृति में रख खुशी में झूमना चाहिए। जैसी बाबा अभी आपकी पालना कर रहा है, ऐसी पालना सतयुग में राजकुमार और राजकुमारियों की भी नहीं होती। इतना नशा है? आप जैसे भाग्यवान और कहीं नहीं हैं क्योंकि सिकीलधे हो ना। एक एक को बाबा ने चुनकर इकट्ठा किया है, किसी को ईस्ट से और किसी को वेस्ट से, अभी सभी मिलकर एक हो गए हैं। अभी आपका पार्ट ओआरसी में है। हमें तो बाबा ने छोटेपन में इतनी अच्छी पालना दी लेकिन आपको तो बड़ों को इतनी अच्छी पालना मिल रही है। बाबा ने आपको तन, मन और धन तीनों सुख के साधन दिये हैं। संसार में जो रॉयल लोग होते हैं उन्हें सिर्फ तन का सुख होगा, मन का नहीं। हमें तो सारे सुख हैं। चेक करो कि हम खुशी में रहते हैं? क्योंकि संगठन में बातें तो आयेंगी हमें भी अनुभव है। संगठन में एक दो के गुण देख उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते जाओ, बातों में नहीं जाओ। संगठन का भी फायदा उठाओ।

देखो, आज संगठन में कितनी रॉयल रीति से बैठे हो, सतयुग भी इसके आगे कुछ नहीं। जो अन्तर का सुख यहाँ है वह सतयुग में भी नहीं होगा। बाहर कुछ भी होता रहे लेकिन बाबा हमें हर हाल में खुश रखता है। ऐसा बाबा फिर कल्प के बाद ही मिलेगा। बाबा ने हमें सैलवेशन के साथ जो दिल की खुशी दी है वह कहीं नहीं मिलती। आपकी जीवन साधारण नहीं, भले भाव-स्वभाव का टकराव तो संगठन में होता ही है लेकिन बाबा का प्यार सब भुला देता है। ज्ञान ताकत देता है। सदा दिल से यही निकलता रहे वाह मेरा बाबा वाह! दुनिया में क्या लगा पड़ा है और बाबा ने हमारा भाग्य कितना श्रेष्ठ बना दिया। खुशी होती है ना? यहाँ खुशी के बिना और है ही क्या, अगर थोड़ा बहुत कुछ होता भी है, वह हिसाब-किताब संगठन में चुक्त्तू हो रहा है। बाबा हमें रोज़ खुशी का खज़ाना देता है, कमाल है बाबा की। धार्मिक स्थानों पर दूसरी बात होती है लेकिन यहाँ परिवार और स्कूल दोनों हैं। जब क्लास में होते हैं तो स्कूल लगता है और जब एक साथ खाते पीते हैं तो घर लगता है। यहाँ दोनों भासना आती है। भगवान सहज बाप के रूप में मिल रहा है यह कम बात नहीं है। वह हमें ऐसे मिला है जैसे हमारा ही था। बाबा ने हमें इतने बड़े संगठन में चलने की शिक्षा दी है। संगठन में थोड़ा

बहुत चलता है लेकिन संगठन अच्छा है। यहाँ जितना ज्ञान योग और धारणाओं पर ध्यान खिचवाया जाता है और कहीं शायद इतना नहीं होता। सदा खुशनुमः रहना है बातों से नहीं डरना। संगठन में बातें तो आयेंगी लेकिन हमारा ध्यान बाबा और पढ़ाई पर हो तो यह बातें कुछ भी नहीं लगेगी। संस्कारों के मिलन में ऐसा होता है। हमने तो बाबा से छोटेपन में आप जैसी पालना पाई है लेकिन आप तो बड़े ऐसी पालना के पात्र हो।

प्रश्न:- दादी जी, हमारे ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन पढ़ाई है सदा पढ़ाई पर हमारा ध्यान रहे इसके लिए क्या करें?

उत्तर:- जो हमारे चारों सब्जेक्ट हैं उन पर विशेष ध्यान रहे। जब हम शुरू-शुरू में बाबा का बनते हैं तो बाबा और पढ़ाई पर बहुत ध्यान रहता है, बहुत उमंग-उत्साह रहता है लेकिन धीरे-धीरे माया अपना रूप दिखाती है। पहले नशे में रहते हैं और पेपर के टाइम सोचते हैं, क्या होगा कैसे होगा। अगर हम बाबा की बनाई हुई दिनचर्या पर ध्यान दें तो सब ठीक हो जाता है। अगर हमारी दिनचर्या ठीक है तो हमारे जैसी खुशी और किसी को नहीं होगी। सुबह-सुबह मुरली सुनकर सारा दिन उसका अनुभव करें। मुरली और योग मिस नहीं करो। क्लास में सिर्फ प्रेजेन्ट के लिए नहीं बैठना लेकिन मन से भी प्रेजेन्ट रहना है। संग से अपनी सम्भाल करनी है। हमें भगवान मिला है यही नशा और खुशी हो।

प्रश्न:- दादी जी, पर-चिन्तन से मुक्त कैसे बनें?

उत्तर:- जब भी समय मिले बीच-बीच में मुरली का मंथन करो। परचितन से कोई भी फायदा नहीं और प्राप्ति भी नहीं। संगठन में परचितन चल सकता है लेकिन चलना नहीं चाहिए। पढ़ाई पर ध्यान देंगे तो सेफ रहेंगे। सारा दिन सेवा तो करते हैं लेकिन अपनी रीति अपनी प्रोग्रेस के लिए मन और बुद्धि का टाइमटेबल बनाओ। रोज़ सवेरे सोचो आज मुझे नया क्या करना है। आज कर्म और बोल में क्या नवीनता होगी। मन की दिनचर्या स्वयं बनाओ इसमें हल्के नहीं बनें। अपनी उन्नति के लिए मन का प्रोग्राम बनाओ। अपनी कमजोरी को जान अपने मन की दिनचर्या बनाओ। मन किसी भी बात में फेल न हो, सब बात में विजयी हो।

प्रश्न:- दादी जी, चलते-चलते ईर्ष्या और रीस उत्पन्न हो जाती है, क्या यह ठीक है?

उत्तर:- संगठन में ईर्ष्या और रीस होगी लेकिन इससे कोई फायदा नहीं और ही नुकसान है। ईर्ष्या की आदत पड़ गई तो निकलने में समय लगता है। हमारी नज़र भाई बहनों पर नहीं मम्मा बाबा पर जाये। भाई बहनों को देखेंगे तो कमी नज़र आयेगी। हमें संगठन मिला है एक दो के उमंग से आगे बढ़ने के लिए, ईर्ष्या करने के लिए नहीं। अपने ऊपर ध्यान दो मुझे क्या करना है। कमजोरी वालों को नहीं देखो, उमंग वालों को देखो।

प्रश्न:- दादी जी, हिसाब-किताब बन रहा है या चुक्ती हो रहा है, उसकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:- अगर चुक्ती हो रहा है तो सन्तुष्टता और हल्कापन फील होगा, भारीपन नहीं लगेगा।

प्रश्न:- दादी जी, सेवा का लक्ष्य क्या है?

उत्तर:- सबको बाबा का परिचय देकर बाबा का बनाना, सिर्फ कनेक्शन में लाना नहीं। उनको बाबा का बनाकर उनकी पीठ करनी है, उमंग-उत्साह में लाना है, बीच में छोड़ नहीं देना है। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

सर्व बन्धनों से मुक्त रहने वाला ही सच्चा तपस्वी है

1) हम सभी इस समय तपस्वीमूर्त होकर बैठे हैं। चाहे तपस्वी कहें, चाहे राजयोगी कहें। जिस घड़ी से बाबा ने आत्मा और परमात्मा बाप की स्मृति दी उस घड़ी से ही प्रैक्टिकल में अपनी तपस्या चालू है। यह सब्जेक्ट जितनी सहज है, उतनी ही मेहनत की है। जो ब्रह्मा बाबा भी कहते थे कि मैं भी इसमें मेहनत करता हूँ। हमारे तपस्या की अन्तिम रिजल्ट है कर्मातीत बनना। अब कर्मातीत बनने के लिये हमें साधना चाहिये। उसके लिए बाबा भिन्न-भिन्न साधन बताते हैं। उदाहरण के लिये – तपस्वी उसको कहेंगे जो सर्व सम्बन्ध के बन्धन से मुक्त हो, तपस्वी उसको कहेंगे जो अपने सर्व संस्कारों के बन्धन से ऊंचा रहे, मुक्त रहे, तपस्वी उनको कहेंगे जो सर्व कर्मेन्द्रियों को अपने अधीन रखे। तब तो हमारी तपस्या सफल है। अगर हम तपस्वी हैं लेकिन अभी तक कोई पुरानी आदत है, पुराना स्वभाव है, पुराना संस्कार है, उसके अधीन हैं, वश हैं तो इसको कहा जाता है विघ्न। कहते हैं ऋषि-मुनि तपस्या करते थे तो असुर विघ्न डालते थे। अपने ही स्वभाव-संस्कार तपस्वी के लिये बहुत बड़े विघ्न हैं। आत्मा है राजा, बैठी है भृकुटि के सिंहासन पर। राजा को चलते-चलते ये कर्मेन्द्रियाँ-कभी आंख धोखा दे देगी, कभी दो इंच की जीभ धोखा दे देगी, कभी कोई इन्द्रिय, कभी कोई इन्द्रिय। तपस्या माना अपने सूक्ष्म संस्कारों पर भी पूरा कन्ट्रोल हो। तपस्या की रिजल्ट है जीवनमुक्ति। जब हम तपस्वी बनें तब इन सभी बन्धनों से मुक्त हो बाबा के सर्व सम्बन्धों के अलौकिक अतीन्द्रिय सुख के मौज में रहें, जिसको जीवनमुक्ति कहते हैं। कई बार बाबा कहते हैं यह अतीन्द्रिय सुख है अन्तिम। यदि अन्त में यह अनुभव हुआ तो क्या वर्णन करेंगे! हम तपस्वियों का एक-एक सेकण्ड अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में बीते, एक बाबा के लव में लीन रहें, तब हमारे अतीन्द्रिय सुख का गायन हो। लेकिन यह तभी हो सकता है जब हम इस स्थिति तक पहुँचे, जहाँ गीता भी समाप्त होती अर्थात् स्मृतिर्लब्धा नष्टोमोहः।

2) तपस्या सच्ची तब कहेंगे जब हम ऐसे स्मृतिर्लब्धा और नष्टोमोहः हो। बाबा ने एक सहज तपस्या की बहुत अच्छी विधि सुनाई है। हमारा अनुभव कहता कि हरेक इस विधि को सहज धारण करो – वह विधि है एक तो बाबा को सदा कर्मेनियन देखो, दूसरा सदा बाबा को कम्बाइन्ड देखो। हमारे तपस्या का यह प्रत्यक्ष

प्रमाण है कि हम सदैव बाबा के साथ कम्बाइन्ड रूप में रहें तो दूसरी कोई भी स्मृति नहीं रहेगी, कोई व्यक्ति, वैभव, वस्तु आकर्षण नहीं करेगी। जब बाबा कम्बाइन्ड है तो उनके आगे न कोई दूसरी याद है, न संकल्प है, न कहीं बुद्धि जायेगी। बुद्धि क्यों जाती है? क्योंकि बाबा को कर्मेनियन नहीं बनाते। फिर बुद्धि किसी न किसी अनेक प्रकारों के पदार्थों में, व्यक्तियों में जाती है। कर्मेनियन बाबा है, कम्बाइन्ड बाबा है।

3) बाबा कई बार पूछते कि क्या ऐसी प्रैक्टिस है जो एक सेकण्ड में सब समेट कर आवाज़ से परे हो जाओ, जिसको अशरीरी स्थिति कहते हैं? इसका अभ्यास सोते, उठते, खाते-पीते, चलते-फिरते, हर घण्टे, हर मिनट करें। जितना यह अभ्यास करेंगे उतना ही हम कर्मातीत स्थिति के नजदीक जायेंगे और उस सुख को अनुभव करेंगे। बाबा समय की सूचना देते रहते। बाबा केवल यह नहीं कहते कि तुम्हें कर्मातीत बनना है लेकिन यह भी कहते कि जब तुम सम्पन्न बनेंगे तब विनाश होगा। सारी सृष्टि को परिवर्तन करने के लिये, रुहानियत की शक्ति उन्हीं को मिले-यह जिम्मेदारी बाबा ने हम सब तपस्वी बच्चों को दे रखी है। सारी सृष्टि की जिम्मेदारी हमारे पर है। जब यह स्मृति रहती है तो हम कहाँ भी टाइम न गँवा कर फास्ट पुरुषार्थ में लग जाते हैं।

4) कई बार बाबा मुरली में कहते हैं कि बच्चे कोई बात का फिक्र नहीं करो लेकिन एक बात का फिक्र जरूर रखना है कि हमें सम्पन्न बनना है। जैसे लौकिक में कोई फिक्र होती तो रात को नींद भी नहीं आती, वह फिक्र बार-बार सामने आती। तो यह भी फिक्र हो कि मुझे शरीर छोड़ने से पहले ऐसा सम्पन्न बनना है जो अन्त में जब मैं शरीर छोड़ूँ तो एकदम सन्नाटा हो जाये। इसके लिये हमें रोज़ मेहनत चाहिये।

5) हम कितने सौभाग्यवान हैं, भगवान कहे बच्चे तुम मेरे दिल तख्त के मालिक हो, तो हमारा तख्त कितना महान है! अगर हम उसी दिल तख्त पर लवलीन रहें तो भी किसी में बुद्धि न जायेगी, न जाने की मार्जिन है। कई बार सेवाओं के उमंग होते हैं। सेवा तो जरूर करो। सेवा तो हमारे ब्राह्मण जीवन का कर्तव्य है। परन्तु सेवा में किसी को भी तीर तब लगेगा जब हमारे में रुहानियत होगी। हर पल, हर कदम बाबा हमें तपस्या के लिये इशारा करता रहता है। अच्छा।